IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वीरांगना झलकारी बाई की वीरता पर लेखकों की विचारधारा का अध्ययन

डॉ. नितिन द्विवेदी

सहायक प्राध्यापक

मॉ चन्द्रिका महिला स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, महोबा (उत्तर प्रदेश)

प्रस्तावना – मुख्यधारा के इतिहासकारों द्वारा झलकारी बाई के योगदान को बहुत विस्तार नहीं दिया गया है, लेकिन आधुनिक स्थानीय लेखकों ने उन्हें गुमनामी से उभारा है। अरुणांचल प्रदेश के राज्यपाल **श्री माता प्रसाद** (21.10.1993 से 16.05.1999 तक) ने झलकारी बाई के जीवनी की रचना की है। इसके अलावा **चोखेलाल वर्मा** ने उनके जीवन पर एक वृहद् काव्य लिखा है, **मोहनदास नैमिशराय** ने उनकी जीवनी को पुस्तकाकार दिया है और भवानी शंकर विशारद ने उनके जीवन परिचय को लिपिबद्ध किया है। **राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त** ने झलकारी की बहादुरी को निम्न प्रकार पंक्तिबद्ध किया है–

'जा कर रण में ललकारी थी, वह तो झाँसी की झलकारी थी।
गोरों से लड़ना सिखा गई, है इतिहास में झलक रही,
वह भारत की ही नारी थी।'

स्वतंत्रता संग्राम और बाद के स्वतंत्रता आन्दोलनों में देश के अनेक वीरों और वीरांगनाओं ने अपनी कुर्बानी दी है। देश की आजादी के लिए शहीद होने वाले ऐसे अनेक वीरों और वीरांगनाओं का नाम तो स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं किन्तु बहुत से ऐसे वीर और वीरांगनायें है, जिनका नाम इतिहास में दर्ज नहीं हैं। तो बहुत से ऐसे भी वीर और वीरांगनायें हैं जो इतिहासकारों की नजर में तो नहीं आ पाये, जिससे वे इतिहास के स्वार्णिम पृष्ठों में तो दर्ज होने से वंचित रहे गये, किन्तु उन्हें लोक

मान्यता इतनी अधिक मिली कि उनकी शहादत बहुत दिनों तक गुमनाम नहीं रह सकी। ऐसे अनेक वीरों और वीरांगनाओं का स्वतंत्रता संग्राम में दिया गया योगदान धीरे–धीरे समाज के सामने आ रहा है।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के प्राण बचाने के लिए स्वयं वीरांगना बलिदान हो जाने वाली वीरांगना झलकारी बाई ऐसी ही एक अमर शहीद वीरांगना है, जिनके योगदान को जानकार लोग बहुत दिन बाद रेखांकित कर पाये हैं। झलकारी जैसे हजारों बलिदानी अब भी गुमनामी के अँधेरे में खोये हैं, जिनको खोजकर स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की भी वृद्धि करने की पहली आवश्यकता है। वीरांगना झलकारी बाई झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की सेना में महिला सेना की सेनापति थी, जिसकी शक्ल रानी लक्ष्मीबाई से हुबहू मिलती थी। झलकारी के पति पूरनलाल रानी झाँसी की सेना में तोपची थे। सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजी सेना में रानी लक्ष्मीबाई के घिर जाने पर झलकारी बाई ने बड़ी सूझ–बूझ स्वामी भक्ति और राष्ट्रीयता का परिचय दिया था। निर्णायक समय में झलकारी बाई ने हम शक्ल होने का फायदा उठाते हुए स्वयं झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई बन गयी थी और असली रानी लक्ष्मीबाई को सकुशल झाँसी की सीमा से बाहर निकाल दिया और रानी झाँसी के रूप में अंग्रेजी सेना से लड़ते–लड़ते शहीद हो गयी थी।

वीरांगना झलकारी बाई के इस प्रकार झाँसी की रानी के प्राण बचाने अपनी मातृभूमि झाँसी और राष्ट्र की रक्षा के लिए दिये गये बलिदान को स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास भले ही अपनी स्वार्णिम पृष्ठों में न समेट सका हो किन्तु झाँसी के लोक इतिहाकारों, कवियों, लेखकों ने वीरांगना झलकारी बाई के स्वतंत्रता संग्राम में दिये गये योगदान को श्रृद्धा के साथ स्वीकार किया है।

वीरांगना झलकारी बाई का सबसे पहले उल्लेख बुन्देलखण्ड के सुप्रसिद्ध साहित्यकार **वृन्दावन लाल वर्मा** ने अपने **उपन्यास लक्ष्मीबाई** में किया था जिससे बाद में धीरे–धीरे अनेक विद्वानों, साहित्यकारों, इतिहासकारों ने झलकारी के स्वतंत्रता संग्राम के योगदान को उद्घाटित किया। झलकारी बाई का विस्तृत इतिहास **भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण** के प्रकाशन विभाग ने **झलकारी बाई शीर्षक** से ही प्रकाशित किया है। बाद में **भारत सरकार के ''पारेट एण्ड टेलीग्राफ विभाग'' ने 22 जुलाई 2001 को झलकारी बाई पर डाक टिकट जारी** कर उसके योगदान को स्वीकार किया है। झाँसी के इतिहासकारों में अधिकतर ने वीरांगना झलकारी बाई को नियमित स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में नहीं सम्मिलित किया किन्तु बुन्देली के सुप्रसिद्ध गीतकार महाकवि

अवधेश ने झलकारी बाई शीर्षक से एक नाटक लिखकर वीरांगना झलकारी बाई की ऐतिहासिकता प्रमाणित की है।

मार्च 2010 में आगरा के दो प्रकाशकों चेतना प्रकाशन और कुमार पब्लिकेशन ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के पाठ्यक्रम के अनुसार प्रकाशित की जिसमें उन्होंने बहुविकल्पीय प्रश्नों में वीरांगना झलकारी को नर्तकी की श्रेणी में प्रकाशित कर वीरांगना को अपमानित करने का प्रयास किया। इन दोनों प्रकाशनों का राजनैतिक व्यक्तियों, सामाजिक संगठनों, बुद्धजीवियों, साहित्यकारों, पत्रकारों ने कड़ा विरोध किया और वीरांगना झलकारी बाई के वास्तविक चरित्र से परिचित कराया।

सन्दर्भ –

1. वर्मा वृन्दावन लाल, झांसी की रानी, पृ.सं.95
2. विशारद भवानी शंकर, झलकारी बाई, आलोक प्रेस झांसी, पृ.सं.5–6
3. प्रताप भानुराय, जंगे आजादी में जबपुर, स्वराज्य संस्थान, भोपाल, पृ.सं.42
4. चंचरीक कन्हैयालाल, 1857 के गदर सम्बन्धी लेख।
5. प्रसाद कलिमा, मर्दों से आगे भी मर्दानी महिलाएँ।